UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 37 भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

इन्दिरा जी का बचपन का नाम इन्दिरा प्रियदर्शिनी था। इनका जन्म 19 नवम्बर, 1917 ई० को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता पं० जवाहर लाल नेहरू और माता कमला नेहरू थी। पं० नेहरू इन्दिरा को ऐसी शिक्षा देना चाहते थे जिससे उनके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास हो सके। माता-पिता के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय होने से प्रियदर्शिनी ने दिल्ली, इलाहाबाद और पुणे आदि में शिक्षा पाई। पुणे से हाईस्कूल पास करके वे शान्ति निकेतन गईं। इन्दिरा के व्यक्तित्व पर नेहरू जी के व्यक्तित्व का बड़ा प्रभाव पड़ा। निर्भीकता और आत्मविश्वास जैसे गुण उन्हें पिता से विरासत में मिले। 29 वर्ष तक लगातार उन्होंने पिता के साथ रहकर राजनैतिक कार्यों में मदद की। सन् 1942 में उनका विवाह फिरोज गांधी से हुआ। इनके दो पुत्र राजीव और संजय गांधी हुए। राजीव गांधी इन्दिरा गांधी की मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री बने। संजय का युवावस्था में ही एक विमान दुर्घटना में देहान्त हो गया।

सन् 1958 ई० में इन्दिरा कांग्रेस केंद्रीय बोर्ड की सदस्या बनीं। सन् 1959 में वह कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गई। सन् 1962 ई० में यूनेस्को अधिशासी मण्डल की सदस्या चुनी गई। लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमण्डल में वे सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनीं। 24 जनवरी, 1966 ई० से 24 मार्च, 1977 और दूसरी बार 14 जनवरी, 1980 से 31 अक्टूबर 1984 तक वह प्रधानमंत्री रहीं। प्रधानमंत्री के रूप में उन्हें भारत-पाक युद्ध का सामना करना पड़ा। सन् 1971 में उन्होंने एकतरफा युद्ध विराम किया। पाकिस्तान की हार हुई। बांग्ला देश का जन्म हुआ। भारत एशिया की प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा। इन्दिरा जी विश्व की प्रमुख नेता के रूप में सामने आईं। अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल में उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम चलाए। उन्होंने देश की दुखती रग को समझा और गरीबी हटाओ का नारा दिया।

बीस सूत्रीय कार्यक्रमों द्वारा उन्होंने अनेक उपलब्धियाँ अर्जित कीं। विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ परमाणु शक्ति का विकास हुआ तथा देश अन्तरिक्ष युग में पहुँचा। कैप्टन राकेश शर्मा द्वारा अन्तरिक्ष यात्रा एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। देश को प्रगतिशील बनाने में उन्होंने सतत प्रयास किया। उनके शासनकाल में खेलकूद को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला। सन् 1982 ई० में एशियाड खेलों का भव्य आयोजन हुआ। 30 अक्टूबर, 1984 को उड़ीसा में दिया गया उनका भाषण देशप्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। 31 अक्टूबर, 1984 को अंगरक्षकों द्वारा गोली मारी जाने पर इनकी मृत्यु हो गई।

https://www.evidyarthi.in/